(IJRSSH) 2014, Vol. No. 4, Issue No. III, Jul-Sep **ISSN: 2249-4642**

SYMBOL OF HARMONY – HOLI

Dr. A. Mukta Vani

Associate Professor, Dept of Sanskrit, Hindi Mahavidyalaya

Hyderabad

समरसता का सूचक – होली

डॉ. ए. मुक्ता वाणी

असोसिएट प्रोफेसर

हिन्दी महाविद्यालय, हैदराबाद

IJRSSH

विश्व का प्रत्येक प्राणी सुख, शान्ति की आकांक्षा रखता है, जिसकी प्राप्यर्थ वह नानाविध प्रयत्न करता रहता है। पर्वों का प्रादुर्भाव व अनुष्ठान इस दिशा में किये जानेवाले प्रयास का यथार्थ विधान है। षड्ङ्गऋतुओ से युक्त भारतवर्ष की विशेषता है कि समय-समय पर इन ऋतुओं से वसुन्धरा श्रृंगार करती है और नूतन रस का संचरण करती रहती है। संसार का यही एकमात्र देश है जहाँ विभिन्न प्रकार की जलवायु, वनस्पति, वातावरण और भूमि उपलब्ध है। सृष्टिकर्ता ने भारत की भूमि को विभिन्न रूपों में पूर्णतः भरा है। इस महिमामण्डित देश की विशिष्टता का जयनाद कवि के शब्दों में मुखरित हुआ है -

भूलोक का गौरव, प्रकृति की पुण्यलीला स्थल कहाँ?

फैला मनोहर गिरि हिमालय, और गंगाजल कहाँ?

सम्पूर्ण देशों से अधिक, किस देश का उत्कर्ष है।

उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है ।।

हाँ वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है।

ऐसा पुरातन देश कोई क्या विश्व में कहीं और है?

- भारत-भारती

तथा- "गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारत भूमि भागे।

स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभू ते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।।

- पुराण

भारतवर्ष की प्रकृति की ओर इंगित करने वाले प्रमुख सार्वभौम चार पर्वों में फाल्गुन पूर्णिमा को मनायी जानेवाली वासन्ती नवसस्येष्टि होली का महत्वपूर्ण स्थान है। इस शुभावसर पर प्रकृति कहती है कि देखो पतझड़ समाप्त हुआ, अब वसन्त का साम्राज्य छा रहा है। जैसे प्रकृतिस्थ सम्पूर्ण पेड़- पौधे नवीन जीवन प्राप्त विशेष शक्ति एवं स्फूर्ति का अनुभव करते हैं वैसे मनुष्य भी हर्षोत्फुल्ल हो उठता है। ऋतुराज वसन्त के शुभागमन के मनोहर सुसमय में आषाढ़ी शस्य के स्वागत की शुभाशा भारत के अन्नदाता कृषक के मन में आनन्द का संचार कर देती है। आषाढ़ी शस्य की फसल भारत की सब फसलों में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इस दिन नई आई फसल को सर्वप्रथम अग्निदेव को अर्पित किया जाता है। संस्कृत कोश में अधपके अन्न को होलक की संज्ञा दी गई है -

तृणाग्निभृष्टार्द्धपक्वशमीधान्यं होलकः । (शब्दकल्पद्रुम)

देवयज्ञ का प्रधान साधन भौतिक अग्नि है, क्योंकि वह सब देवों का दूत है। इसी कारण वैदिक कर्मकाण्ड के अनुसार नवीन वस्तु प्रथम देवों को समर्पित कर पुनः अपने उपयोग में लाया जाता है। यथा -

व्रीह्यश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे
मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च
मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे
मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । (यजु. 18-12)

IJRSSH

(IJRSSH) 2014, Vol. No. 4, Issue No. III, Jul-Sep **ISSN: 2249-4642**

अर्थात् मनुष्यों को चाहिए कि चावल, जौ, उड़द, तिल, मूंग, गेहूँ और मसूर आदि से अच्छे प्रकार संस्कार किये हुए पकवान्न बनाकर अग्नि में होम करें, तत्पश्चात् स्वयं खायें और अन्यों को खिलाएँ।

श्रुति कहती है –

केवलाघो भवति केवलादी ।

अर्थात् अकेला खानेवाला पाप खानेवाला है। मनु महाराज इसका समर्थन करते हुए लिखते हैं "जो मनुष्य केवल अपने लिए भोजन पकाता है, वह पाप भक्षण करता है। यज्ञशेष ही सज्जनों का भोज्य पदार्थ है।"

इस प्रकार प्रकृति क्रम के अनुकूल आचरण एवं नवसस्येष्टि यज्ञ कर देवताओं तक उनका भाग पहुंचाते हुए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना इस त्योहार की विशेषताएँ हैं।

भारतीय उत्सव केवल आमोद-प्रमोद के साधन नहीं, अपितु धर्मपरायण भारतीयों की प्रत्येक बात में वैज्ञानिकता की पुट लगी हुई है। यथा - आज के दिन रंग गुलाल लगाने की प्रथा का वैज्ञानिक गूढ़ रहस्य हो सकता है। इस ऋतु में ढाक तथा कुसुम्ब के फूलो का रंग डालने से प्लेग के उत्पादक कीडे नहीं काटेंगे, मच्छर दूर रहेंगे, चेचक का प्रकोप कम होगा। पुष्प-पत्तों का रस मलने से रक्त विकार का भय दूर हो जाता था, लेकिन अब बहुत ही बदरंग तथा रसायन से तैयार किये हुए रंग मिलते हैं, जिन्हें लगाना अत्यन्त हानिकारक है। साथ ही शराब आदि मादक द्रव्यों का पान कर मदान्ध हो नाचना, गाना, अपशब्दों का प्रयोग करना हमारी संस्कृति पर कुठाराघात करना है।

इस शुभ पर्व पर सब लोग ऊँच-नीच का विचार छोड़कर स्वच्छ और सहृदय भाव से आपस में मिलते रहें तो होलिकोत्सव को भारत की एकता को सबल सूत्र में बाँधे रहने का श्रेय प्राप्त होता है। जिस देश में वेशभूषा, स्थानीय रीति-रिवाज, अनेक बोलियाँ और खान-पान की दृष्टि से विविधता झलकती है, वहाँ हमारी संस्कृति ने सदैव विविधता में एकता का आभास कराया है। यतोहि आज राजा-रंक, स्वामी-सेवक, अमीर-गरीब का भेदभाव स्वयमेव रंग- अबीर की बहारों में तिरोहित हो जाता है।

IJRSSH

भक्तशिरोमणि प्रह्लाद एवं दैत्यराज हिरण्यकशिपु की कथा से हमें शिक्षा मिलती है कि सत्य की ज्योति के समक्ष असत्य का समस्त कुचक्र भस्मसात् हो जाता है। होलिका-राक्षसी का दहन मानो सारे बुराइयों को मिटाने का संदेश देती है।

इस प्रकार समता और बन्धुत्व के भावों को अपनी जीवन-विधा का शाश्वत स्वर बनाते हुए हम चाहेंगे कि प्रतिवर्ष इसी तरह प्रेम-प्रसार का पर्व, समरसता का सूचक होलिकोत्सव आता रहे. और हम सब द्विगुणित उत्साह, उल्लास एवं उमंग से भरपूर हो यह पर्व मनाते रहें तथा आनन्दित होते रहें। यही इस पर्व का पुनीत सन्देश है।

जो पर्व त्योहार अपने, हैं मनाते हो मगन ।

हैं बड़े वे भाग्यवाले, हैं सदा वे धन्य जन ।।

IJRSSH